B.A. (Hons.) Arts
Semester- VI
Instrumental Music (Sitar)

Paper Code: BHI-322
Title: History and Theory
Unit: 2

Raag Ragini Classification

Prepared by
Dr. Geeta Singh

राग रागिनी वर्गीकरण

- मध्य काल के प्रारंभ में राग वर्गीकरण की दो धाराएं अस्तित्व में आईं । पहली धारा राग रागिनी पद्धति के रूप में विकसित हुई और दूसरी धारा मेल पद्धति के रूप में विकसित हुई । राग रागिनी पद्धति में कुछ रागों को पुरुष राग, कुछ को स्त्री राग (रागिनी), कुछ रागों को पुत्र राग और कुछ को पुत्रवधू रागिनी के रूप मे विभाजित किया गया ।

राग रागिनी वर्गीकरण में प्रमुख चार मतों का उल्लेख ग्रंथों में मिलता है-

1. शिवमत अथवा सोमेश्वर मत
2. कृष्ण अथवा कल्लीनाथ मत
3. भरत मत
4. हनुमन्मत

शिवमत के 6 राग और 36 रागिनियाँ -

1. श्री – मालश्री, त्रिवेणी, गौरी, केदारी, मधुमाधवी, पहाड़िका ।
2. वसंत – देशी, देवगिरी, वराटी, टोड़िका, ललिता, हिंदोली ।
3. भैरव – भैरवी, गुर्जरी, रामकिरी, गुणकिरी, बंगाली, सैंधवी ।
4. पञ्चम – विभाषा, भूपाली, कर्णाटी, बड़हंसिका, मालवी, पटमञ्जरी ।
5. मेघ – मल्लारी, सोरठी, सावेरी, कौशिकी, गांधारी, हरश्रृंगारा ।
6. नटनारायण - कामोदी, आभीरी, नाटिका, कल्याणी, सारंगी, नट्टहम्बीरा ।

कृष्ण अथवा कल्लीनाथ मत के 6 राग और 36 रागिनियाँ –

1. श्री – गौरी, कोलाहल, धवला, वरीराजी, मालकौंस, देवगंधार ।
2. वसंत – अंधाली, गुणकली, पटमञ्जरी. गौड़गिरी, धांकी, देवसाग ।
3. भैरव – भैरवी, गुर्जरी, बिलावली, बिहाग, कर्णाटी, कानड़ा |
4. पञ्चम – त्रिवेणी, हस्तन्तरेतहा, अहीरी, कोकभ, वेरारी, आसावरी |
5. मेघ – बंगाली, मधुरा, कामोद, धनाश्री, देवतीर्थी, दिवाली |
6. नटनारायण – त्रिबंकी, तिलंगी, पूर्वी, गांधारी, रामा, सिंधमल्लारी |

भरत मत के 6 राग और 30 रागिनियाँ –

1. भैरव - मधुमाधवी, ललिता, वरारी, भैरवी, बहुली|
2. मालकौंस - गौरी, विद्यावती, तोड़ी, खम्बावती, ककुभ।
3. हिंडोल – रामकली, मालवी, आसावरी, देवारी, केकी।
4. दीपक – केदारी, गौरा, रुद्रावती, कामोद, गुर्जरी ।
5. श्री - सैंधवी, काफी, ठुमरी. विचित्रा, सोहनी ।
6. मेघ – मल्लारी, सारंगा, देशी, रतिवल्लभा, कानरा ।

हनुमन्मत के 6 राग और 30 रागिनियाँ –

1. भैरव - बंगाली, सैंधवी, भैरवी, वरारी, मदमादी|
2. मालकौंस - तोड़ी, गुणकिरी, गौरी, खम्बावती, ककुभ ।
3. हिंडोल – रामकली, देशाख, ललिता, बिलावली, पटमञ्जरी ।
4. दीपक – देसी, कामोदी, केदारी, कानड़ा, नाटिका ।
5. श्री - मालश्री, आसावरी, धनाश्री, वसंती, मारवा ।
6. मेघ – तनक, मल्लारी, गुर्जरी, भूपाली, देशकार ।

उपसंहार

- राग रागिनी वर्गीकरण के चारों मतों में प्रमुख रागों की संख्या में समानता थी | सभी मतों में मुख्य ६ राग माने गए किन्तु इन रागों के नामों में भिन्नता थी | रागिनियों के विषय में शिवमत तथा कल्लिनाथ मत के अनुसार प्रत्येक राग की ६-६ रागिनियाँ मानी गयी थीं | इस प्रकार सभी ६ रागों की ६-६ रागिनियाँ मिलकर कुल ६ प्रमुख राग और ३६ रागिनियाँ हुईं। इसी प्रकार भरत मत और हनुमन्मत के अनुसार प्रत्येक राग की ५-५ रागिनियाँ मानी गयीं थीं। इस प्रकार ६ प्रमुख रागों की ५-५ रागिनियाँ मिलकर ६ प्रमुख राग और ३० रागिनियाँ मानी गईं | पुत्र रागों और पुत्रवधू रागिनियों की संख्या के विषय में चारों मतों में समानता थी | सभी चारों मतों में ८-८ पुत्र राग तथा ८-८ पुत्रवधू रागिनियाँ मानी गयीं |

- अंत में ऐसा कहा जा सकता है कि प्राचीन ग्रन्थकारों ने संगीत की उत्पत्ति देवी-देवताओं से मानी है | अतः इन राग-रागिनियों को भी देवी-देवता स्वरुप मानकर वर्गीकृत किया गया है | ग्रंथों में उनके स्वरूपों का भी वर्णन किया गया है | जिनके आधार पर राग-रागिनियों के चित्र भी बनाये गए हैं, जो आज भी पुस्तकों में उपलब्ध हैं|

Thank You